Kamla Nehru Institute of Physical and Social Sciences

(Affiliated to Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Ayodhya U.P.)
Accredited by NAAC with 'A' Grade (2nd Cycle)
An ISO 9001:2015 Certified Institution
Sultanpur-228 118, Uttar Pradesh, India
http://knipss.ac.in principalknipss@gmail.com 9415255398

50 Years of Excellence

Criteria: III
Matrix : 3.2.2

NAAC 3rd Cycle

2022-23

सेमिनार

"धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका"

G20 भारत 2023 INDIA

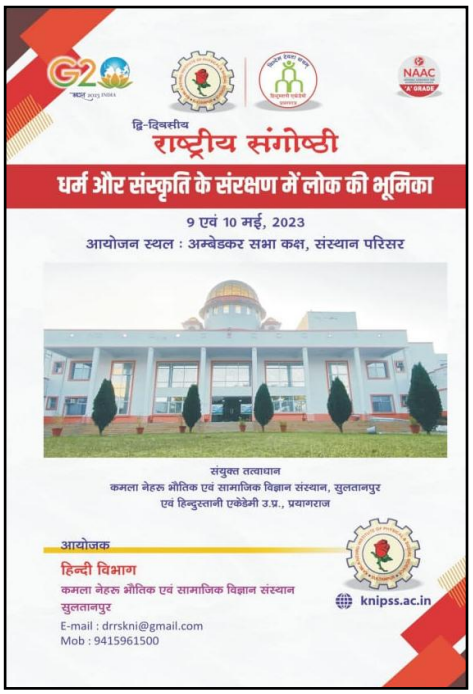

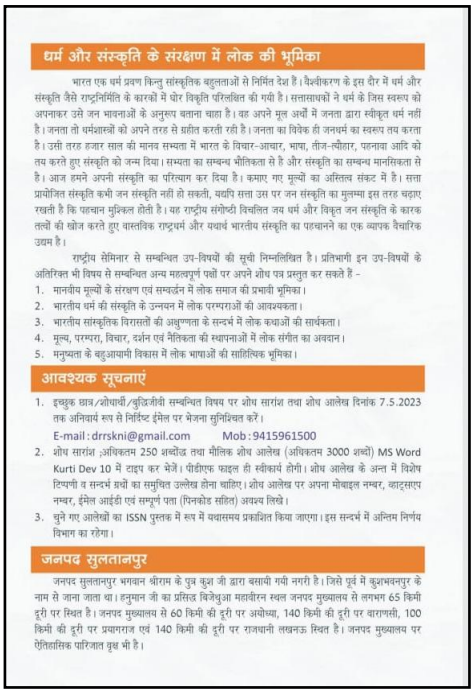

NAAC 'A' GRADE

द्वि-दिवसीय

राष्ट्रीय संगोष्ठी

धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका

9 एवं 10 मई, 2023

आयोजन स्थल : अम्बेडकर सभा कक्ष, संस्थान परिसर

संयुक्त तत्वाधान
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर
एवं हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र., प्रयागराज

आयोजक
हिन्दी विभाग
कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान
सुलतानपुर
E-mail : drrskni@gmail.com
Mob : 9415961500

knipss.ac.in

धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका

भारत एक धर्म प्रवण किन्तु सांस्कृतिक बहुलताओं से निर्मित देश हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में धर्म और संस्कृति जैसे राष्ट्रनिर्मिति के कारकों में घोर विकृति परिलक्षित की गयी है। सत्तासाधकों ने धर्म के जिस स्वरूप को अपनाकर उसे जन भावनाओं के अनुरूप बताना चाहा है। वह अपने मूल अर्थों में जनता द्वारा स्वीकृत धर्म नहीं है। जनता तो धर्मशास्त्रों को अपने तरह से ग्रहीत करती रही है। जनता का विवेक ही जनधर्म का स्वरूप तय करता है। उसी तरह हजार साल की मानव सभ्यता में भारत के विचार-आचार, भाषा, तीज-त्यौहार, पहनावा आदि को तय करते हुए संस्कृति को जन्म दिया। सभ्यता का सम्बन्ध भौतिकता से है और संस्कृति का सम्बन्ध मानसिकता से है। आज हमने अपनी संस्कृति का परित्याग कर दिया है। कमाए गए मूल्यों का अस्तित्व संकट में है। सत्ता प्रायोजित संस्कृति कभी जन संस्कृति नहीं हो सकती, यद्यपि सत्ता उस पर जन संस्कृति का मुलम्मा इस तरह चढ़ाए रखती है कि पहचान मुश्किल होती है। यह राष्ट्रीय संगोष्ठी विचलित जय धर्म और विकृत जन संस्कृति के कारक तत्वों की खोज करते हुए वास्तविक राष्ट्रधर्म और यथार्थ भारतीय संस्कृति का पहचानने का एक व्यापक वैचारिक उद्यम है।

राष्ट्रीय सेमिनार से सम्बन्धित उप-विषयों की सूची निम्नलिखित है। प्रतिभागी इन उप-विषयों के अतिरिक्त भी विषय से सम्बन्धित अन्य महत्वपूर्ण पक्षों पर अपने शोध पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं -

1. मानवीय मूल्यों के संरक्षण एवं सम्वर्द्धन में लोक समाज की प्रभावी भूमिका।
2. भारतीय धर्म की संस्कृति के उन्नयन में लोक परम्पराओं की आवश्यकता।
3. भारतीय सांस्कृतिक विरासतों की अक्षुण्णता के सन्दर्भ में लोक कथाओं की सार्थकता।
4. मूल्य, परम्परा, विचार, दर्शन एवं नैतिकता की स्थापनाओं में लोक संगीत का अवदान।
5. मनुष्यता के बहुआयामी विकास में लोक भाषाओं की साहित्यिक भूमिका।

आवश्यक सूचनाएं

1. इच्छुक छात्र/शोधार्थी/बुद्धिजीवी सम्बन्धित विषय पर शोध सारांश तथा शोध आलेख दिनांक 7.5.2023 तक अनिवार्य रूप से निर्दिष्ट ईमेल पर भेजना सुनिश्चित करें।
   E-mail : drrskni@gmail.com Mob : 9415961500
2. शोध सारांश ;अधिकतम 250 शब्दोंद्ध तथा मौलिक शोध आलेख (अधिकतम 3000 शब्दों) MS Word Kurti Dev 10 में टाइप कर भेजें। पीडीएफ फाइल ही स्वीकार्य होगी। शोध आलेख के अन्त में विशेष टिप्पणी व सन्दर्भ ग्रथों का समुचित उल्लेख होना चाहिए। शोध आलेख पर अपना मोबाइल नम्बर, व्हाट्सएप नम्बर, ईमेल आईडी एवं सम्पूर्ण पता (पिनकोड सहित) अवश्य लिखे।
3. चुने गए आलेखों का ISSN पुस्तक में रूप में यथासमय प्रकाशित किया जाएगा। इस सन्दर्भ में अन्तिम निर्णय विभाग का रहेगा।

जनपद सुलतानपुर

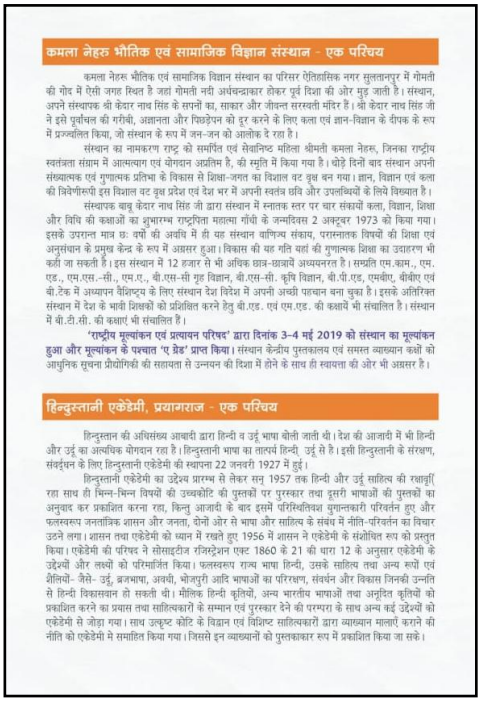

जनपद सुलतानपुर भगवान श्रीराम के पुत्र कुश जी द्वारा बसायी गयी नगरी है। जिसे पूर्व में कुशभवनपुर के नाम से जाना जाता था। हनुमान जी का प्रसिद्ध बिजेथुआ महावीरन स्थल जनपद मुख्यालय से लगभग 65 किमी दूरी पर स्थित है। जनपद मुख्यालय से 60 किमी की दूरी पर अयोध्या, 140 किमी की दूरी पर वाराणसी, 100 किमी की दूरी पर प्रयागराज एवं 140 किमी की दूरी पर राजधानी लखनऊ स्थित है। जनपद मुख्यालय पर ऐतिहासिक पारिजात वृक्ष भी है।

कमला नेहरु भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान - एक परिचय

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान का परिसर ऐतिहासिक नगर सुलतानपुर में गोमती की गोद में ऐसी जगह स्थित है जहां गोमती नदी अर्धचन्द्राकार होकर पूर्व दिशा की ओर मुड़ जाती है। संस्थान, अपने संस्थापक श्री केदार नाथ सिंह के सपनों का, साकार और जीवन्त सरस्वती मंदिर हैं। श्री केदार नाथ सिंह जी ने इसे पूर्वांचल की गरीबी, अज्ञानता और पिछड़ेपन को दूर करने के लिए कला एवं ज्ञान-विज्ञान के दीपक के रूप में प्रज्ज्वलित किया, जो संस्थान के रूप में जन-जन को आलोक दे रहा है।

संस्थान का नामकरण राष्ट्र को समर्पित एवं सेवानिष्ठ महिला श्रीमती कमला नेहरू, जिनका राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में आत्मत्याग एवं योगदान अप्रतिम है, की स्मृति में किया गया है। थोड़े दिनों बाद संस्थान अपनी संख्यात्मक एवं गुणात्मक प्रतिभा के विकास से शिक्षा-जगत का विशाल वट वृक्ष बन गया। ज्ञान, विज्ञान एवं कला की त्रिवेणीरूपी इस विशाल वट वृक्ष प्रदेश एवं देश भर में अपनी स्वतंत्र छवि और उपलब्धियों के लिये विख्यात है।

संस्थापक बाबू केदार नाथ सिंह जी द्वारा संस्थान में स्नातक स्तर पर चार संकायों कला, विज्ञान, शिक्षा और विधि की कक्षाओं का शुभारम्भ राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर 1973 को किया गया। इसके उपरान्त मात्र छः वर्षो की अवधि में ही यह संस्थान वाणिज्य संकाय, परास्नातक विषयों की शिक्षा एवं अनुसंधान के प्रमुख केन्द्र के रूप में अग्रसर हुआ। विकास की यह गति यहां की गुणात्मक शिक्षा का उदाहरण भी कही जा सकती है। इस संस्थान में 12 हजार से भी अधिक छात्र-छात्रायें अध्ययनरत है। सम्प्रति एम.काम., एम.एड., एम.एस.-सी., एम.ए., बी.एस-सी गृह विज्ञान, बी.एस-सी. कृषि विज्ञान, बी.पी.एड, एमबीए, बीबीए एवं बी.टेक में अध्यापन वैशिष्ट्य के लिए संस्थान देश विदेश में अपनी अच्छी पहचान बना चुका है। इसके अतिरिक्त संस्थान में देश के भावी शिक्षकों को प्रशिक्षित करने हेतु बी.एड. एवं एम.एड. की कक्षायें भी संचालित है। संस्थान में बी.टी.सी. की कक्षाएं भी संचालित हैं।

'राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद' द्वारा दिनांक 3-4 मई 2019 को संस्थान का मूल्यांकन हुआ और मूल्यांकन के पश्चात 'ए ग्रेड' प्राप्त किया। संस्थान केन्द्रीय पुस्तकालय एवं समस्त व्याख्यान कक्षों को आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी की सहायता से उन्नयन की दिशा में होने के साथ ही स्वायत्ता की ओर भी अग्रसर है।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज - एक परिचय

हिन्दुस्तान की अधिसंख्य आबादी द्वारा हिन्दी व उर्दू भाषा बोली जाती थी। देश की आजादी में भी हिन्दी और उर्दू का अत्यधिक योगदान रहा है। हिन्दुस्तानी भाषा का तात्पर्य हिन्दी, उर्दू से है। इसी हिन्दुस्तानी के संरक्षण, संवर्द्धन के लिए हिन्दुस्तानी एकेडेमी की स्थापना 22 जनवरी 1927 में हुई।

हिन्दुस्तानी एकेडेमी का उद्देश्य प्रारम्भ से लेकर सन् 1957 तक हिन्दी और उर्दू साहित्य की रक्षावृ(रहा साथ ही भिन्न-भिन्न विषयों की उच्चकोटि की पुस्तकों पर पुरस्कार तथा दूसरी भाषाओं की पुस्तकों का अनुवाद कर प्रकाशित करना रहा, किन्तु आजादी के बाद इसमें परिस्थितिवश युगान्तकारी परिवर्तन हुए और फलस्वरूप जनतांत्रिक शासन और जनता, दोनों ओर से भाषा और साहित्य के संबंध में नीति-परिवर्तन का विचार उठने लगा। शासन तथा एकेडेमी को ध्यान में रखते हुए 1956 में शासन ने एकेडेमी के संशोधित रूप को प्रस्तुत किया। एकेडेमी की परिषद ने सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1860 के 21 की धारा 12 के अनुसार एकेडेमी के उद्देश्यों और लक्ष्यों को परिमार्जित किया। फलस्वरूप राज्य भाषा हिन्दी, उसके साहित्य तथा अन्य रूपों एवं शैलियों- जैसे- उर्दू, ब्रजभाषा, अवधी, भोजपुरी आदि भाषाओं का परिरक्षण, संवर्धन और विकास जिनकी उन्नति से हिन्दी विकासवान हो सकती थी। मौलिक हिन्दी कृतियों, अन्य भारतीय भाषाओं तथा अनूदित कृतियों को प्रकाशित करने का प्रयास तथा साहित्यकारों के सम्मान एवं पुरस्कार देने की परम्परा के साथ अन्य कई उद्देश्यों को एकेडेमी से जोड़ा गया। साथ उत्कृष्ट कोटि के विद्वान एवं विशिष्ट साहित्यकारों द्वारा व्याख्यान मालाएँ कराने की नीति को एकेडेमी मे समाहित किया गया। जिससे इन व्याख्यानों को पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित किया जा सके।

राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजन समिति

विनोद सिंह
संरक्षक
प्रबन्धक-केएनआईपीएसएस, सुलतानपुर
विधायक एवं पूर्व मंत्री

प्रो. आलोक कुमार सिंह
सह संरक्षक
प्राचार्य- कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान, सुलतानपुर

देवेन्द्र प्रताप सिंह
सह संरक्षक
सचिव- हिन्दुस्तानी ऐकेडमी उ.प्र. प्रयागराज

प्रो. राधेश्याम सिंह
अध्यक्ष

प्रो. प्रतिमा सिंह
सचिव

डॉ. पवन कुमार रावत
सह सचिव

डॉ. प्रिया श्रीवास्तव
सदस्य

कु. दीपिका पाण्डेय
सदस्य

स्वागत समिति

प्रो. सुशील कुमार सिंह (उप प्राचार्य), प्रो. विजय प्रताप सिंह (कला संकाय प्रभारी)
डॉ. प्रमोद कुमार सिंह (समाज शास्त्र), प्रो. किरन सिंह, श्रीमती रंजना सिंह
श्रीमती वन्दना सिंह, डॉ. शक्ति सिंह

अनुशासन समिति

अनुराग पाण्डेय, डॉ. निकहत रफीक, डॉ. अनिल कुमार यादव

मुख्य वक्तागण

प्रो. डा. विजय बहादुर सिंह
सम्पादक - वागर्थ
पूर्व निदेशक - भारतीय भाषा परिषद, कोलकाता
पूर्व विभागाध्यक्ष- उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान, भोपाल

प्रो. डा. राधावल्लभ त्रिपाठी
पूर्व कुलपति
भारतीय संस्कृत संस्थान
पूर्व विभागाध्यक्ष- हरिसिंह गौर केन्द्रीय विवि, सागर

डा. रविनन्दन सिंह
प्रसिद्ध साहित्य चिन्तक व आलोचक
प्रयागराज

कमल नयन पाण्डेय
सम्पादक - युग तेवर, लोक संस्कृति विशेषज्ञ
सुलतानपुर

आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप'
लोक सहित्य विशेषज्ञ
कादीपुर, सुलतानपुर

प्रो. डा. अनुराग मिश्र
हिन्दी विभाग
का.सु.साकेत महाविद्यालय, अयोध्या

इन्द्रमणि कुमार
हिन्दी विभाग
राणा प्रताप महाविद्यालय, सुलतानपुर

डॉ. अंजनी कुमार सिंह
युवा साहित्यकार व चिन्तक
मानापुर, प्रतापगढ़

अभिषेक कम्प्यूटर्स, सुल. '9918717272'

Kamla Nehru Institute of Physical and Social Sciences

(Affiliated to Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Ayodhya U.P.)
Accredited by NAAC with 'A' Grade (2nd Cycle)
An ISO 9001:2015 Certified Institution
Sultanpur-228 118, Uttar Pradesh, India

Criteria: III
Matrix : 3.2.2

NAAC 3rd Cycle

http://knipss.ac.in principalknipss@gmail.com 9415255398

कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान सुलतानपुर, उ.प्र.के हिंदी विभाग एवं हिन्दुस्तानी एकेडमी प्रयागराज, उ.प्र. के संयुक्त तत्वावधान में 09 मई, 2023 को एक द्वि– दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन **"धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका"** विषय पर किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. आलोक कुमार सिंह ने माँ सरस्वती एवं बाबू के.एन.सिंह के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि भारत की समृद्ध संस्कृति राष्ट्र का गौरव है। इस गौरव के संरक्षण एवं संवर्धन में आयोजित यह संगोष्ठी विचारों की स्थापना में एक अभिनव आयाम सृजित करेगी। ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित भारतीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधा वल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि भारत की बहुलतावादी संस्कृति और धर्म के संरक्षण में लोक की भूमिका एक प्रतिमान है। समकालीन भारतीय समाज में धर्म और संस्कृतियों के स्वरूप को विखण्डित करने का आज षडयंत्र रचा जा रहा है। यह हमारे समय और समाज की एक गंभीर चिन्ता और चुनौती है। आज इसी विमर्श के लिए यह वैचारिक समागम हो रहा है।

पूर्व अध्यक्ष, भारतीय भाषा परिषद् कोलकाता एवं प्रसिद्ध आलोचक प्रो.विजय बहादुर सिंह ने कहा कि भारतीय संस्कृतियों में हमारा जन–मन निहित है। लोक संस्कृति, लोक परम्परा, लोक संगीत, लोककथा आदि में हम आज की समकालीन चुनौतियों से मुक्त होने के बीजमंत्र की प्राप्ति का अनुसंधान कर सकते हैं।

विभागाध्यक्ष प्रो.राधेश्याम सिंह ने कहा कि इक्कीसवीं सदी में हमें अपने धर्म और संस्कृति के स्वरूप के रक्षार्थ चिन्तनशील व संवेदनशील होना होगा। हिन्दुस्तानी एकेडमी के डा. रविनंदन सिंह ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि भारत की सामाजिक और सांस्कृतिक परम्परा की पहचान उसकी संस्कृति और मूल्यों से है। डा. इन्द्रमणि कुमार ने कहा कि लोक की भूमिका संस्कृतियों के संरक्षण में प्रत्येक कालखण्ड में हमेशा से महत्वपूर्ण रही है। डा.आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप' ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि लोक साहित्य भारतीय संस्कृति की अमूल्य संपदा है। इसका संरक्षण मानवीय विकास के लिए आवश्यक है। प्रो.अनुराग मिश्र ने कहा कि वैश्वीकरण की आँधी में हमें अपनी संस्कृति और मूल्यों के साथ खड़े रहकर इसका प्रतिरोध करना होगा। कमल नयन पाण्डेय ने कहा कि भारतीय धर्म और संस्कृति शुरू से ही मानवीय व सहिष्णु रही है।

10 मई, 2023 को संगोष्ठी के दूसरे दिन के कार्यक्रम का शुभारंभ प्राचार्य प्रो. आलोक कुमार सिंह ने किया। **"धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक की भूमिका"** विषय पर आयोजित संगोष्ठी की सफलता की कामना करते हुए उन्होंने कहा कि आधुनिक भारत के सांस्कृतिक विरासतों को सुरक्षित रखने में बहुमूल्य विचार कोष रूप में इस संगोष्ठी से निःसन्देह प्राप्त होंगे।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता, प्रसिद्ध आलोचक प्रो.विजय बहादुर सिंह ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि वर्तमान भारत में तीव्रता से बढ़ रही अपसंस्कृति के प्रचलन ने हमारी सामाजिक व्यवस्था का ध्वस्तीकरण किया है। यह तत्व हमारे विमर्श के केन्द्र में होना चाहिए।

विभागाध्यक्ष प्रो.राधेश्याम सिंह ने कहा कि इक्कीसवीं सदी में बाजारवाद के दुष्प्रभाव से हमें अपनी लोक कलाओं को बचाना होगा। लोक कलाकारों को सम्मान और लोक कला को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित करना होगा। राणा प्रताप पी.जी.कालेज सुलतानपुर के एसोसिएट प्रोफेसर डा. इन्द्रमणि कुमार ने कहा कि लोकसंगीत की विलुप्त होती परम्परा हमारी सांस्कृतिक जड़ों को कमजोर कर रही है। हमारी पीढ़ियाँ इस आनन्द से वंचित हो कर रह जायेंगी। श्री कमल नयन पाण्डेय ने लोकगीतों की परम्परा पर प्रकाश डालते हुए स्त्री पक्ष और स्त्री प्रश्नों को नवीन सन्दर्भों में रेखांकित किया।

वार्तालाप में भाषा की सहजता व तथ्य की सरलता अतिआवश्यक - प्रोफेसर राधेश्याम सिंह

संगोष्ठी के तकनीकी सत्र में अखिलेश वर्मा ने "रेणु के उपन्यासों में लोक संस्कृति का अनुशीलन, प्राची पाल ने धर्म और संस्कृति के संरक्षण में लोक चेतना" ,शैलेन्द्र सरोज ने "संस्कृति के संरक्षण में लोक कलाकारों का अवदान" श्रीकांत सिंह ने "समकालीन हिंदी कहानियों में संस्कृति विमश", दीपमाला ने "भक्तिकालीन कवियों की कविता में सांस्कृतिक चेतना" एवं पद्मिनी ने "आधुनिक हिंदी उपन्यासों में सांस्कृतिक मूल्य" आदि विषय पर शोधार्थियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किये। इस सत्र की अध्यक्षता प्रो. राधेश्याम सिंह ने किया। संचालन डा. पवन कुमार रावत ने किया। कार्यक्रम में प्रो. प्रतिमा सिंह, डा. रंजना सिंह, डा. वंदना सिंह, प्रो. आर. पी. सिंह, प्रो. किरन सिंह, वन्दना सिंह, प्रो. प्रवीण कुमार सिंह, प्रिया श्रीवास्तव, दीपिका पाण्डेय आदि उपस्थित रहे।

संवाद वह पुल है जिस पर चलकर आप दूसरों के हृदय तक पहुंचते हैं : प्राचार्य

स्वदेश संवाद ■ सुलतानपुर

भाषा प्रवीणता एवं संचार कौशल विषय पर बृहस्पतिवार को केएनआईपीएसएस के हिन्दी विभाग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला मूलतः भाषाओं की गहन जानकारी व सम्प्रेषण प्राविधि, प्रस्तुतिकरण व उपयोगी सीमाएँ, देश काल व्यक्ति व परिस्थितियों के अनुरूप भाषाओं के अनुप्रयोग तथा विचारों के संचारण में भाषाओं की सार्थकता पर केन्द्रित रही। इस एक दिवसीय कार्यशाला की शुरूआत संस्थान प्राचार्य प्रोफ़ेसर आलोक कुमार सिंह नें माँ सरस्वती एवं बाबू केएन सिंह के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित के साथ किया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे संस्थान प्राचार्य प्रो आलोक कुमार सिंह नें उद्बोधन में कहा कि संवाद वह पुल है जिस पर चलकर आप दूसरों के हृदय तक पहुंचते हैं। संवाद ही आपके व्यक्तित्व का आइना बनता है और बातचीत का सलीका ही आपकी छवि को गढ़ता है। इसलिए सामने वाले व्यक्ति को अहमियत देते हुए आत्मीयता से मुस्करा कर बात करनी चाहिए। संस्थान के उप प्राचार्य प्रोफ़ेसर सुशील कुमार सिंह नें छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि बातचीत को प्रभावशाली बनाने के दौरान कम से कम आधे या दो तिहाई समय तक आई कान्टैक्ट बनाए रखें। ध्यान से सामने वाले की बात सुनें और समझने के हावभाव को दर्शाएं। इस. कार्यशाला में संस्थान के आई क्यू ए सी के डाइरेक्टर प्रो. प्रवीन सिंह नें बताया कि पहली बार किसी से मिलते समय सबसे पहले अपना परिचय दें लेकिन परिचय देने का तरीका काफी संक्षिप्त और प्रभावशाली होना चाहिए। ज्यादा लम्बा परिचय देने की स्थिति में सामने वाले की सोच में आपकी छवि आत्म प्रशंसनीय व्यक्ति की बन सकती है। हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ प्रतिमा सिंह नें बताया कि बातचीत के दौरान जिस विषय पर बात की जा रही हो उसी सन्दर्भ में बात करें। अन्यथा ऐसे व्यक्ति की जरूरी बातें भी अक्सर अनदेखी व अनसुनी कर दी जाती है। हिन्दी विभाग के ही असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ पवन रावत नें कहा कि बात करते समय बीच-बीच में उंगलियां न चटकाएं इससे बातचीत का क्रम टूटता है और आपकी उदासीनता झलकती है। इससे बात का मूल प्रभावहीन हो जाता है। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो राधेश्याम सिंह ने कार्यक्रम के अंत में अपने उद्बोधन में कहा कि जब भी बात करें तो दिल और दिमाग दोनों का प्रयोग करें। जब भी किसी से बात करते हों तो उसे यह नहीं लगना चाहिए की आप उसकी मौजूदगी की अनदेखी कर रहे है। अर्थात बात करते समय किसी अन्य काम को प्राथमिकता न दें। वार्तालाप में भाषा की सहजता व तथ्य की सरलता अतिआवश्यक है। इस अवसर पर सत्यम व आस्था सिंह सहित संस्थान के लगभग 75 छात्र एवं छात्राओं नें प्रतिभाग किया। इस मौके पर संजय कुमार,प्रिया श्रीवास्तव, दीपिका पाण्डेय, विक्रम सिंह, आदि प्राध्यापक तथा कर्मचारी गण मौजूद थे।

केएन आई के हिन्दी विभाग द्वारा कार्यशाला का आयोजन

अध्यापकों द्वारा प्रबंधक पर लगाया गया धन उगाही व भ्रष्टाचार का आरोप

Kamla Nehru Institute of Physical and Social Sciences

(Affiliated to Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Ayodhya U.P.)
Accredited by NAAC with 'A' Grade (2nd Cycle)
An ISO 9001:2015 Certified Institution
Sultanpur-228 118, Uttar Pradesh, India

http://knipss.ac.in principalknipss@gmail.com 9415255398

Criteria: III
Matrix : 3.2.2

NAAC 3rd Cycle

बातचीत का सलीका आपकी छवि को गढ़ता है

- बात करते समय उंगलियां न चटकाएं इससे बातचीत का क्रम टूटता है:डॉ.पवन
- वक्ताओं ने कहा,सामने वाले की बात सुनें और समझने का हावभाव दर्शाएं

सुलतानपुर, संवाददाता। भाषा प्रवीणता एवं संचार कौशल विषय को लेकर गुरुवार को केएनआई पीएसएस के हिन्दी विभाग में एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला मूलतः भाषाओं की गहन जानकारी व सम्प्रेषण प्राविधि, प्रस्तुतिकरण व उपयोगी सीमाएं, देश काल व्यक्ति व परिस्थितियों के अनुरूप भाषाओं के अनुप्रयोग तथा विचारों के संचारण में भाषाओं की सार्थकता पर केन्द्रित रही।

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे संस्थान प्राचार्य प्रो. आलोक कुमार सिंह नें कहा कि संवाद वह पुल है जिस पर चलकर आप दूसरों के हृदय तक पहुंचते हैं। संवाद ही आपके व्यक्तित्व का आइना बनता है और बातचीत का सलीका ही आपकी छवि को गढ़ता है। इसलिए सामने वाले व्यक्ति को अहमियत देते हुए आत्मीयता से मुस्करा कर बात करनी चाहिए। संस्थान के उप प्राचार्य प्रोफ़ेसर सुशील कुमार सिंह ने कहा कि बातचीत को प्रभावशाली बनाने के दौरान कम से कम आधे या दो तिहाई समय तक आई कान्टैक्ट बनाए रखें। ध्यान से सामने वाले की बात सुनें और समझने के हावभाव को दर्शाएं। कार्यशाला में संस्थान के आईक्यूएसी के डाइरेक्टर प्रो. प्रवीन सिंह नें बताया कि पहली बार किसी से मिलते समय सबसे पहले अपना परिचय दें लेकिन परिचय देने का तरीका काफी संक्षिप्त और प्रभावशाली होना चाहिए। ज्यादा लम्बा परिचय देने की स्थिति में सामने वाले की सोच में आपकी छवि आत्म प्रशंसनीय व्यक्ति की बन सकती है।

कार्यशाला में हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. प्रतिमा सिंह नें बताया कि बातचीत के दौरान जिस विषय पर बात की जा रही हो उसी सन्दर्भ में बात करें। अन्यथा ऐसे व्यक्ति की जरूरी बातें भी अक्सर अनदेखी व अनसुनी कर दी जाती है। हिन्दी विभाग के ही असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. पवन रावत ने कहा कि बात करते समय बीच-बीच में उंगलियां न चटकाएं इससे बातचीत का क्रम टूटता है, आपकी उदासीनता झलकती है। इससे बात का मूल प्रभावहीन हो जाता है। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. राधेश्याम सिंह ने कहा कि जब भी बात करें तो दिल और दिमाग दोनों का प्रयोग करें। जब भी किसी से बात करते हों तो उसे यह नहीं लगना चाहिए की आप उसकी मौजूदगी की अनदेखी कर रहे है। अर्थात बात करते समय किसी अन्य काम को प्राथमिकता न दें। वार्तालाप में भाषा की सहजता व तथ्य की सरलता अतिआवश्यक है। यहां पर सत्यम व आस्था सिंह सहित संस्थान छात्र एवं छात्राओं नें प्रतिभाग किया। इस मौके पर संजय कुमार,प्रिया श्रीवास्तव, दीपिका पाण्डेय, विक्रम सिंह रहे।

हिन्दी विभाग ने आयोजित की कार्यशाला

सुलतानपुर, संवाददाता।

भाषा प्रवीणता एवं संचार कौशल विषय पर गुरूवार को कैएनआई पीएसएस के हिन्दी विभाग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन संस्थान के अम्बेडकर हाल में सम्पन्न हुआ। यह कार्यशाला मूलत: भाषाओं की गहन जानकारी व सम्प्रेषण प्राविधि, प्रस्तुतिकरण व उपयोगी सीमाएँ, देश काल व्यक्ति व परिस्थितियों के अनुरूप भाषाओं के अनुप्रयोग तथा विचारों के संचारण में भाषाओं की सार्थकता पर केन्द्रित रही।

इस एक दिवसीय कार्यशाला की शुरूआत संस्थान के प्राचार्य प्रोफेसर आलोक कुमार सिंह नें मां सरस्वती एवं बाबू के.एन. सिंह के चित्र पर दीप प्रज्जवलन कर, माल्यार्पण के साथ किया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे संस्थान प्राचार्य प्रो. आलोक कुमार सिंह नें उद्बोधन में कहा कि संवाद वह पुल है जिस पर चलकर आप दूसरों के हृदय तक पहुंचते हैं। संवाद ही आपके व्यक्तित्व का आइना बनता है और बातचीत का सलीका ही आपकी छवि को गढ़ता है। इसलिए सामने वाले व्यक्ति को अहमियत देते हुए आत्मीयता से मुस्करा कर बात करनी चाहिए। संस्थान के उप प्राचार्य प्रोफेसर सुशील कुमार सिंह नें छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि बातचीत को प्रभावशाली बनाने के दौरान कम से कम आधे या दो तिहाई समय तक आई कान्टैक्ट बनाए रखें। ध्यान से सामने वाले की बात सुनें और समझने के हावभाव को दर्शाएं। इस. कार्यशाला में संस्थान के आईक्यूएसी के डाइरेक्टर प्रो. प्रवीन सिंह नें बताया कि पहली बार किसी से मिलते समय सबसे पहले अपना परिचय दें। लेकिन परिचय देने का तरीका काफी संक्षिप्त और प्रभावशाली होना चाहिए। ज्यादा लम्बा परिचय देने की स्थिति में सामने वाले की सोच में आपकी छवि आत्म प्रशंसनीय व्यक्ति की बन सकती है। हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ० प्रतिमा सिंह नें बताया कि बातचीत के दौरान जिस विषय पर बात की जा रही हो उसी सन्दर्भ में बात करें। अन्यथा ऐसे व्यक्ति की जरूरी बातें भी अक्सर अनदेखी व अनसुनी कर दी जाती है। हिन्दी विभाग के ही असिस्टेंट प्रोफेसर डा० पवन रावत नें कहा कि बात करते समय बीच-बीच में उंगलियां न चटकाएं इससे बातचीत का क्रम टूटता है और आपकी उदासीनता झलकती है। इससे बात का मूल प्रभावहीन हो जाता है। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो०. राधेश्याम सिंह नें कार्यक्रम के अंत में अपने उद्बोधन में कहा कि जब भी बात करें तो दिल और दिमाग दोनों का प्रयोग करें।

व्यक्तित्व का आइना बनता है संवाद : प्रो. आलोक

केएनआई पीएसएस में भाषा प्रवीणता व संचार कौशल पर हुई कार्यशाला

संवाद न्यूज एजेंसी

सुल्तानपुर। भाषा प्रवीणता एवं संचार कौशल विषय पर बृहस्पतिवार को केएनआई पीएसएस के हिंदी विभाग की ओर से आंबेडकर हाल में कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला भाषाओं की गहन जानकारी व संप्रेषण प्राविधि पर केंद्रित रही।

संस्थान के प्राचार्य प्रो. एके सिंह ने कहा कि संवाद वह पुल है जिस पर चलकर आप दूसरों के हृदय तक पहुंचते हैं। संवाद ही आपके व्यक्तित्व का आइना बनता है और बातचीत का सलीका ही आपकी छवि को गढ़ता है। इसलिए सामने वाले व्यक्ति को अहमियत देते हुए आत्मीयता से मुस्करा कर बात करनी चाहिए।

उप प्राचार्य प्रो. सुशील कुमार सिंह ने कहा कि बातचीत को प्रभावशाली बनाने के दौरान कम से कम आधे या दो तिहाई समय तक आई कांटैक्ट बनाए रखें। ध्यान से सामने वाले की बात सुनें और समझने के हावभाव को दर्शाएं। संस्थान के आईक्यूएसी के निदेशक प्रो. प्रवीन सिंह ने कहा कि पहली बार किसी से मिलते समय सबसे पहले अपना परिचय दें। परिचय देने का तरीका काफी संक्षिप्त और प्रभावशाली होना चाहिए। इस मौके पर सत्यम, आस्था सिंह, संजय कुमार, प्रिया श्रीवास्तव, दीपिका पांडेय व विक्रम सिंह मौजूद रहे।

केएन आई के हिन्दी विभाग द्वारा कार्यशाला का आयोजन

सुलतानपुर। भाषा प्रवीणता एवं संचार कौशल विषय पर आज दिन बृहस्पतिवार को के एन आई पी एस एस के हिन्दी विभाग द्वारा एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह आयोजन संस्थान के अम्बेडकर हाल में सम्पन्न हुआ। यह कार्यशाला मूलतः भाषाओं की गहन जानकारी व सम्प्रेषण प्राविधि, प्रस्तुतिकरण व उपयोगी सीमाएँ, देश काल व्यक्ति व परिस्थितियों के अनुरूप भाषाओं के अनुप्रयोग तथा विचारों के संचारण मे भाषाओं की सार्थकता पर केन्द्रित रही। इस एक दिवसीय कार्यशाला की शुरूआत संस्थान प्राचार्य प्रोफेसर आलोक कुमार सिंह ने माँ सरस्वती एवं बाबू के.एन. सिंह के चित्र पर दीप प्रज्जवलन कर, माल्यार्पण के साथ किया। कार्यशाला की अध्यक्षता कर रहे संस्थान प्राचार्य प्रो. आलोक कुमार सिंह नें उदबोधन मे कहा कि संवाद वह पुल है जिस पर चलकर आप दूसरों के हृदय तक पहुंचते हैं। संवाद ही आपके व्यक्तित्व का आइना बनता है और बातचीत का सलीका ही आपकी छवि को गढ़ता है। इसलिए सामने वाले व्यक्ति को अहमियत देते हुए आत्मीयता से मुस्करा कर बात करनी चाहिए। संस्थान के उप प्राचार्य प्रोफेसर सुशील कुमार सिंह नें छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि बातचीत को प्रभावशाली बनाने के दौरान कम से कम आधे या दो तिहाई समय तक आई कान्टैक्ट बनाए रखें। ध्यान से सामने वाले की बात सुनें और समझने के हावभाव को दर्शाएं। इस. कार्यशाला में संस्थान के आई क्यू ए सी के डाइरेक्टर प्रो. प्रवीन सिंह नें बताया कि पहली बार किसी से मिलते समय सबसे पहले अपना परिचय दें, लेकिन परिचय देने का तरीका काफी संक्षिप्त और प्रभावशाली होना चाहिए। ज्यादा लम्बा परिचय देने की स्थिति में सामने वाले की सोच में आपकी छवि आत्म प्रशंसनीय व्यक्ति की बन सकती है। हिन्दी विभाग की वरिष्ठ प्रोफेसर डॉ. प्रतिमा सिंह नें बताया कि बातचीत के दौरान जिस विषय पर बात की जा रही हो उसी सन्दर्भ में बात करें। अन्यथा ऐसे व्यक्ति की जरूरी बातें भी अक्सर अनदेखी व अनसुनी कर दी जाती है। हिन्दी विभाग के ही असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. पवन रावत नें कहा कि बात करते समय बीच–बीच में उंगलियां न चटकाएं इससे बातचीत का क्रम टूटता है और आपकी उदासीनता झलकती है। इससे बात का मूल प्रभावहीन हो जाता है। हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रो. राधेश्याम सिंह नें कार्यक्रम के अंत में अपने उदबोधन में कहा कि जब भी बात करें तो दिल और दिमाग दोनों का प्रयोग करें। जब भी किसी से बात करते हो तो उसे यह नहीं लगना चाहिए की आप उसकी मौजूदगी की अनदेखी कर रहे है। अर्थात बात करते समय किसी अन्य काम को प्राथमिकता न दें। वार्तालाप में भाषा की सहजता व तथ्य की सरलता अतिआवश्यक है। इस अवसर पर सत्यम व आस्था सिंह सहित संस्थान के लगभग 75 छात्र एवं छात्राओंनेप्रतिभाग किया। इस मौके पर संजय कुमार,प्रिया श्रीवास्तव, दीपिका पाण्डेय, विक्रम सिंह, आदि प्राध्यापक तथा कर्मचारी गण मौजूद थे।

अध्यापकों द्वारा प्रबंधक पर लगाया गया धन उगाही व भ्रष्टाचार का आरोप

सुलतानपुर। कुड़वार विकासखंड के बहलोलपुर गांव में स्थित शंकर सुमन लघु माध्यमिक विद्यालय इस समय चर्चा का विषय बना हुआ है। शिक्षण कार्य तो दूर प्रबंधक आपस में धन का बंदरबांट

Kamla Nehru Institute of Physical and Social Sciences

(Affiliated to Dr. Ram Manohar Lohia Avadh University Ayodhya U.P.)
Accredited by NAAC with 'A' Grade (2nd Cycle)
An ISO 9001:2015 Certified Institution
Sultanpur-228 118, Uttar Pradesh, India

Criteria: III
Matrix : 3.2.2

NAAC 3rd Cycle

http://knipss.ac.in principalknipss@gmail.com 9415255398

List of Participants

S.N	Name	Designation	Dept.	Mobile No.
1.	PROF. ALOK KUMAR SINGH	PRINCIPAL		9984876699
2.	Prof. J.S. SHUKLA	PROFESSOR	Commerce	9450214833
3.	DR. VIRENDRA KR SRIVASTAVA	Lecturer	Commerce	9451970804
4.	Prof. RADHEY SHYAM SINGH	PROFESSOR	Hindi	9415961500
5.	Prof. PRATIMA SINGH	PROFESSOR	Hindi	9415797330
6.	MR. PAWAN KUMAR RAWAT	AP	Hindi	9580968434
7.	DR. PRIYA SRIVASTAVA	AP	Hindi	9453267130
8.	MISS DEEPIKA PANDEY	Lecturer	Hindi	9580684645
9.	Prof. V P SINGH	HOD	English	9415969099
10.	DR. SUNITA RAI	AP	English	9793360216
11.	Prof. SMT. KIRAN SINGH	HOD	Economics	9451032638
12.	DR. PRADEEP KR TRIPATHI	Lecturer	Economics	9450042518
13.	Prof. SUSHIL KUMAR SINGH	HOD	Med. History	9415878462
14.	MR. SHAKTI SINGH	AP	Med. History	9792644488
15.	DR. DEVENDRA KUMAR SINGH	AP	Med. History	9415811117
16.	DR. DEEP MALA DWIVEDI	AP	Med. History	9838615846
17.	Prof. OM PRAKASH SINGH	HOD	Geography	9450216342
18.	MR. SUDHANSHU PRATAP SINGH	AP	Geography	9654624826
19.	DR. RAVI PRAKASH MISHRA	AP	Geography	9889035234
20.	SMT. RANJANA SINGH	HOD	Pol.Sc.	8004929291
21.	MR. ANURAG PANDEY	AP	Pol.Sc.	9454844444
22.	MR. JITENDRA KUMAR SINGH	AP	Pol.Sc.	8382029911
23.	MR. AJIT KUMAR SINGH	AP	Pol.Sc.	9453384144
24.	Prof. PRAMOD KUMAR SINGH	HOD	Sociology	9450214607
25.	SMT. VANDANA SINGH	HOD	Sanskrit	9415969666
26.	DR. SARVESH KUMAR	AP	Sanskrit	9873547773
27.	DR. NIKHAT RAFIQUE	HOD	Urdu	9889044182
28.	DR. ATUL KUMAR MISHRA	HOD	Psychology	9336841254
29.	Prof. PRAVEEN KR. SINGH	HOD	Physical Education	9415968434
30.	Prof. INDU SINGH	HOD	Zoology	9451096728
31.	MS POONAM JAISWAL	Lecturer	Botany	8887570775
32.	Prof. RAGHVENDRA PRATAP SINGH	HOD	Chemistry	9415453202
33.	MR. P.K. SINGH	AP	Education	8765845602
34.	DR. BIHARI SINGH	AP	Education	9452051205
35.	DR. D.P. MISHRA	AP	Education	9415968300
36.	DR. U.S. SINGH	AP	Education	9451232288
37.	MR. BANWARI	AP	Education	9452189857
38.	MR. DILIP KUMAR SINGH	AP	Education	9565139526
39.	MR. SANTOSH SINGH KUSHWAHA	AP	Education	9415446650
40.	MR. SUDHAKAR SHUKLA	HOD	LL.B-3	9956442054
41.	MR. VIVEK	PRE Ph.D Course Work	-	9473588803
42.	VED PRAKASH MAURYA	PRE Ph.D Course Work	-	8303755082

43.	MR. AMBARISH KUMAR PANDEY	PRE Ph.D Course Work	-	9005438794
44.	MR. VIKAS TIWARI	PRE Ph.D Course Work	-	9452499654
45.	MR. SHRIKANT SINGH	PRE Ph.D Course Work	-	7007265301
46.	MS. PADMINI	PRE Ph.D Course Work	-	9936316160
47.	MS. ARCHANA	PRE Ph.D Course Work	-	9369932459
48.	MS. PUSHPA YADAV	PRE Ph.D Course Work	-	9565647341
49.	MS. MALTI DEVI	PRE Ph.D Course Work	-	6394563938
50.	MS. PRACHI PAL	PRE Ph.D Course Work		9454840678
51.	MS. RICHA DEVI	PRE Ph.D Course Work	-	9616781166
52.	MS. DIPLOMA	PRE Ph.D Course Work	-	6394713772
53.	MS. ARCHANA	PRE Ph.D Course Work	-	9532252423
54.	MR. SANTOSH SINGH	PRE Ph.D Course Work	-	8318998788
55.	MS. ROSHANI LODHI	PRE Ph.D Course Work	-	9305237132
56.	MR. BRIJESH KUMAR	PRE Ph.D Course Work	-	9454936582
57.	MR. JAMUNA PRASAD	PRE Ph.D Course Work	-	9695387558
58.	MR. RAM BACHAN SONKAR	PRE Ph.D Course Work	-	7800793944
59.	MR. ANIL KUMAR	PRE Ph.D Course Work	-	9554007525
60.	MR. ASHOK KUMAR	PRE Ph.D Course Work	-	9794777323
61.	MR. PRAMOD VERMA	PRE Ph.D Course Work	-	8604930509
62.	MR. SHAILENDRA SAROJ	PRE Ph.D Course Work		8604930509
63.	MR. SUNIL KUMAR YADAV	PRE Ph.D Course Work	-	9935821342
64.	MR. TILAK RAM	PRE Ph.D Course Work	-	5002570166
65.	MOHD NAVED	PRE Ph.D Course Work	-	8853049978
66.	MR. SUDHIR KUMAR VERMA	PRE Ph.D Course Work	-	9452485190
67.	MS. RITA GAUTAM	PRE Ph.D Course Work	-	6393046225
68.	MS. DIPTI GUPTA	PRE Ph.D Course Work	-	8423230256
69.	MS. KIRAN UPADHYAY	PRE Ph.D Course Work	-	9794663671
70.	MR. DEVI DAYAL	PRE Ph.D Course Work	-	9452807085
71.	MR. VINOD KUMAR SHUKLA	PRE Ph.D Course Work	-	9452807285
72.	MR. ARUNA KUMAR	PRE Ph.D Course Work	-	8858393915
73.	MR. JITENDRA KUMAR MAURA	PRE Ph.D Course Work	-	9795879700
74.	MR. JAGDISH KUMAR YADAV	PRE Ph.D Course Work	-	7084995052
75.	MR. AKHILESH KUMAR YADAV	PRE Ph.D Course Work	-	9648565870
76.	MR. AKHILESH KUMAR GUPTA	PRE Ph.D Course Work	-	8542831268
77.	MR. ROHIT KUMAR SINGH	PRE Ph.D Course Work	-	9453566336
78.	MS. SONAM YADAV	PRE Ph.D Course Work	-	9839542990
79.	MS. ROOPA PANDEY	PRE Ph.D Course Work	-	9838370036
80.	MR. ADITYA PRATAP SINGH	PRE Ph.D Course Work	-	9554333200
81.	MS. POOJA SAROJ	PRE Ph.D Course Work	-	9125141637

Prof. Radhey Shyam Singh